अथ चतुर्थोध्यायः

चोत्था ग्यान करमसन्न्यासयोग अद्धयाय

श्रीभगवानुवाच

इमं विवस्वते योगं, प्रोक्तवानहमव्ययम्।
विवस्वान्मनवे प्राह, मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत।। १

स्रीभगुवान् बोल्ले

(करमयोग कहण का इतहास)

बिना खोट का योग कह्या यो, विवस्वत् ताईँ पार्थ, मन्नै।
कह्या विवस्वत् नै मनु ताईँ, मनु नै इक्स्वाकू तैँ बोल्ल्या।। १

एवं परम्पराप्राप्तमिमं राजर्षयो विदुः।
स कालेनेह महता, योगो नष्टः परंतप।। २

न्यूँ इक-दूज्जै तैँ आया यो, जाण्या रिसिमुनि-से राज्याँ नै।
वो यो लाम्बै बखताँ तैँ इत, योग लुपत होग्या था अर्जन।। २

स एवायं मया तेऽद्य, योगः प्रोक्तः पुरातनः।
भक्तोऽसि मे सखा चेति, रहस्यं ह्येतदुत्तमम्।। ३

वो ए यो मन्नै तेरै तईँ, आज बताया योग पुराणा।
भगत सै तैँ मीत बी मेरा, हरेक तैँ नाँ कहणै जोग्गा।
क्यूँकी यो सै भोत्तै आच्छा।। ३

अर्जुन उवाच

अपरं भवतो जन्म, परं जन्म विवस्वतः।
कथमेतद्विजानीयां, त्वमादौ प्रोक्तवानिति।। ४

अर्जन बोल्ल्या

(पहल्याँ क्यूक्कर तन्नै बोल्ल्या)

पाच्छै आप का जलम होया, अर पहल्याँ जलम विवस्वत् का।
क्यूक्कर यो मैँ समझूँ मान्नँ, अक तन्नै सब तैँ पहल्याँ यो।

योग बताया था रै भाई!।। ४

श्रीभगवानुवाच

बहूनि मे व्यतीतानि, जन्मानि तव चार्जुन।
तान्यहं वेद सर्वाणि, न त्वं वेत्थ परंतप।। ५

स्रीभगुवान् बोल्ले

(जाम्म्या पहल्याँ बी था मैं)

भोत मेरे बीत्ते जलम सैं, अर तेरै बी अर्जन, उन नै।
मैं सूँ जाणूँ सार्याँ नै ए, नाँ तैं जाणै उन नै अर्जन।। ५

अजोऽपि सन्नव्ययात्मा, भूतानामीश्वरोऽपि सन्।
प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय, संभवाम्यात्ममायया।। ६

नाँ मैं जाम्मूँ सै अक्सै, ज्ञान सक्ति सुभाव बी मेरा।
तह्याँ-तह्याँ तैं होणै आळे, छोट्टे, बड्डे सार्याँ का ए।।
सासक, मालक होन्दा बी मैं, त्रिगुणा प्रक्रिती निज माया नै।
बस मैं कर कैं प्रगटूँ सूँ मैं, आत्मसुभावी माया तैं ए।। ६

यदा यदा हि धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य, तदात्मानं सृजाम्यहम्।। ७

(धरम हाण पै परगट होऊँ)

जिद-जिद हो सै जग कै धारक, आचार धरम की, करतब की।
हानी अर्जन, ऊँच्चा हो ज्या, दुराचार सै, तद्दै खुद नै।
प्रगट करूँ सूँ मैं दुनियाँ मैं।। ७

परित्राणाय साधूनां, विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय, संभवामि युगे-युगे।। ८

रक्सा खात्तर भले जण्याँ की, नास करण नै कुकर्मियाँ का।
सदाचार नै टिकाण खात्तर, परगट होऊँ हर जुग मैं मैं।। ८

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म, नैति मामेति सोऽर्जुनः।। ९

(इसा जाणन का फाय्दा)

जलम करम बी मेरा अद्भुत, न्यूँ जो जाणै तन्त समझ कैं।
तज काया फेर जलम नाँ वो, पावै, मन्नै पावै सै वो।। ९

वीतरागभयक्रोधा, मन्मया मामुपाश्रिताः।
बहवो ज्ञानतपसा, पूता मद्भावमागताः।। १०

तज लगाव डर अर गुस्सै नै, 'मैं' ए बण ज्याँ मुझ पै टिकदे।
घणे जणे ग्यानाग्री मैं तप, निर्मल हो कैं मैं ए बण ज्याँ।। १०

ये यथा मां प्रपद्यन्ते, तांस्तथैव भजाम्यहम्।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते, मनुष्याः पार्थ सर्वशः।। ११

(मेरै रस्तै चाल्लैं माणस)

जो जिस तह्रियाँ धोरै मेरै, आवैं माणस, उन नै मैं बी।
उसै भाव तैं अपणाऊँ सूँ, मेरी राह चलैं सैं माणस।
पिरथा के सुत, सभी तह्याँ तैं।। ११

काङ्क्षन्तः कर्मणां सिद्धिं, यजन्त इह देवताः।
क्षिप्रं हि मानुषे लोके, सिद्धिर्भवति कर्मजा।।१२

चाह्वैं जो कर्माँ की सिद्धि, पूज्जैं इत देवाँ नै माणस।
जल्दी क्यूँकी मनुजलोक मैं, फळ तैं होवै सिद्धि करम की।। १२

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं, गुणकर्मविभागशः।
तस्य कर्तारमपि मां, विद्ध्यकर्तारमव्ययम्।। १३

(सुभा करम तैं बरण च्यार सैं)

च्यारूँ बरण बणाए मन्नै, गुण करमाँ का भाग देख कै।
साधारण और असाधारण, सुभाव करम मैं बाँड उन नै।
बरणाँ का कर्ता बी मन्नै, जाण अकर्ता अविकारी नै।। १३

न मां कर्माणि लिम्पन्ति, न मे कर्मफले स्पृहा।
इति मां योऽभिजानाति, कर्मभिर्न स बध्यते।।१४

(करमाँ तैं नाँ कोण बँधै सै)

नाँ सैँ मेरै करम चिपटदे, नाँ मैँ करमाँ का फळ चाहूँ।
न्यूँ मन्नै जो जाणै माणस, करमाँ तैँ नाँ वो सै बँधदा।। १४

एवं ज्ञात्वा कृतं कर्म, पूर्वैरपि मुमुक्षुभिः।
कुरु कर्मैव तस्मात्त्वं, पूर्वैः पूर्वतरं कृतम्।। १५

(करमाँ की महिमा)

न्यूँ जाण समझ करम करैँ थे, पाच्छळ के बी मोक्ष चाहँदे।
कर करमै इस कारण तैँ तैँ, पुरखे पाच्छै थे जो करदे।। १५

किं कर्म किमकर्मेति, कवयोऽप्यत्र मोहिताः।
तत्ते कर्म प्रवक्ष्यामि, यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात्।।१६

के सै करणाँ, के नाँ करणाँ, बैठ निकम्मा, कुछ किमे नाँ करणाँ।
समझणिये बी इस मैँ भरमैँ, वो तन्नै करणाँ नाँ करणाँ।
वो आज बताऊँगा तन्नै, जो जाण समझ कैँ छूट्टैगा।
सुभ ओर असुभ तैँ तैँ अर्जन।। १६

कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं, बोद्धव्यं च विकर्मणः।
अकर्मणश्च बोद्धव्यं, गहना कर्मणो गतिः।। १७

करणजोग बी समझै माणस, समझै वो बी बरज्या जो सै।
नाँ करणा बी समझै माणस, गहरा कर्माँ का तत हो सै।। १७

कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्मणि च कर्म यः।
स बुद्धिमान् मनुष्येषु, स युक्तः कृत्स्नकर्मकृत्।। १८

करणै मैँ नाँ-करणा समझै, नाँ-करणै मैँ करम समझदा।
वो अकल आळा माणसाँ मैँ, वो सै योगी पूर्ण करम जो।।
करदा माणस सूझ-बूझ तैँ।। १८

यस्य सर्वे समारम्भाः, कामसंकल्पवर्जिताः।
ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं, तमाहुः पण्डितं बुधाः।। १९

जिस के सारे करणे हों सैँ, इच्छा अर संकल्पाँ कै बिन।
ज्ञान आग मैँ जळे करम सैँ, जिस के, उस नै कहँदे 'पण्डत'।

'बुध' सब जो वैँ ततव समझ दे।। १९

त्यक्त्वा कर्मफलासङ्गं, नित्यतृप्तो निराश्रयः।
कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि, नैव किञ्चित् करोति सः।। २०

छोड करमफळ मैँ आसक्ती, त्रिपत हमेसा, बिना आसरै।
करम करण मैँ लाग्या बी जो, नाँ ए किम्मे करदा सै वो।। २०

निराशीर्यतचित्तात्मा, त्यक्तसर्वपरिग्रहः।
शारीरं केवलं कर्म, कुर्वन् नाप्नोति किल्बिषम्।। २१

तज कैँ त्रिस्णा इच्छा नै अर, कर काब्बू काया मन बुद्धी।
तज सब साधन धन वैभव, 'काया चाल्है' इस स्वात्तर ए।
करम करै जो, कोन्या पड़दा, पाप कीच मैँ कद्दे माणस।। २१

यदृच्छालाभसंतुष्टो, द्वन्द्वातीतो विमत्सरः।
समः सिद्धावसिद्धौ च, कृत्वापि न निबध्यते।। २२

बिन माँगे जो मिल ज्या, उस मैँ, खुस हो रहँदा सर्दी-गर्मी।
हानि-लाभ अर सुख-दुख-से, आप्पस मैं भिड़दे जोड़्याँ तैँ।।
हट कैँ रहँदा पूरै इन तै, छोड ईरखा बैर भाव नै।
रहै एक-सा सफळ बिफळ हो, कर बी करम नहीँ वो बँधदा।। २२

गतसङ्गस्य मुक्तस्य, ज्ञानावस्थितचेतसः।
यज्ञायाचरतः कर्म, समग्रं प्रविलीयते।। २३

(करम योग तो यग्ग्य जिसा सै)

कर्मफळाँ मैँ राग छोड कैँ, छूट्या राग-द्वेस-जिस्याँ तैँ।
आत्मबोध मैँ स्थित मन आळा, यग की खात्तर, यग्यभाव तैँ।
करै करम जो, पूरा ए वो, अकरम बण कैँ मिट ज्यावै सै।। २३

ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं, ब्रह्मकर्मसमाधिना।। २४

(यग्ग्याँ के भेद)

यग्यक्रिया अर उस के साधन, ब्रह्म सभी अर कारक हौं सैँ।

ब्रह्म हव्य सै, ब्रह्म अग्नि मैँ, ब्रह्म ऋत्विक् का होम ब्रह्म सै।
ब्रह्मै उस नै पाणाँ हो सै, ब्रह्म करम मैँ लाग्यै मन तैँ।। २४

दैवमेवापरे यज्ञं, योगिनः पर्युपासते।
ब्रह्माग्नावपरे यज्ञं, यज्ञेनैवोपजुह्वति।। २५

देवाँ कै ए यग नै दूज्जे, करममारगी करदे रहँदे।
ब्रह्म अग्नि मैँ और यग्य नै, आत्मा नैँ सैँ ब्रह्म हव्य तैँ।
आहुति दे कैँ यग्य करैँ सैँ।। २५

श्रोत्रादीनीन्द्रियाण्यन्ये, संयमाग्निषु जुह्वति।
शब्दादीन्विषयानन्य, इन्द्रियाग्निषु जुह्वति।। २६

कान-आँख-सी ग्यान करान्दी, इन्द्रियाँ नैँ सैँ ओर साधक।
ध्यान, धारणा और समाधी, इन संयम आग्गाँ मैँ होम्मैँ।
सबद-रूप-से विसयाँ नैँ सैँ, इन्द्री आग्गाँ मैँ वैँ होम्मैँ।। २६

सर्वाणीन्द्रियकर्माणि, प्राणकर्माणि चापरे।
आत्मसंयमयोगाग्नौ, जुह्वति ज्ञानदीपिते।। २७

सारे इन्द्रियाँ के कर्म जो, करणाँ-छूणाँ से सैँ, उन नै।
प्राणाँ के पाँच्चूँ करमाँ नै, बुद्धि तत्त्व कै संयमरूपी।
ज्ञान हवा पा खूब्बै धँधकी, योग अग्नि मैँ होम्मैँ जो सैँ।। २७

द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञा, योगयज्ञास्तथापरे।
स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च, यतयः संशितव्रताः।। २८

[१]जनहितकारी काम्माँ खात्तर, दान धनाँ के द्रव्ययग्य सैँ।
[२]भूख प्यास अर गर्मी सर्दी, सहणा होवै तपोयग्य सै।।
[३]आठ अङ्ग का योग साध कैँ, चित्तवृत्तियाँ नै बस मैँ करणा।
योगयग्य यो हो सै तीज्जा, [४]इस्ट बिसै पै नित पढ़णा।।
स्वाद्ध्याय यग्य यो चौत्था सै, [५]सारासार समझ कैँ जग का।
ततव समझणा ज्ञानयग्य सै, इन नै करदे संयम आळे।
थिर सैँ रहँदे चुणी राह पै।। २८

अपाने जुह्वति प्राणं, प्राणेऽपानं तथापरे।
प्राणापानगती रुद्ध्वा, प्राणायामपरायणाः।। २९

मुँह अर नाक्काँ तैँ हो बायू, जावै, आवै काया चाल्लै।
योगी इन नै रोक ह्रिदे मैँ, भर कैँ राक्खैँ प्राणायामी।।
स्वासवृत्ति जो भीत्तर जावै, 'अप-अन=अपान' नीच्चै जावै।
भीत्तर तैँ जो ऊप्पर आन्दी, उच्छ्वास व्रित्ति 'प्राण' कुहावै।।
भरैँ हवा नै हिरदै भीत्तर, 'पूरक' प्राणायाम करैँ जिद।
ह्रिदै भरे इस स्वास वायु मैँ, उच्छ्वास प्राण होम्मैँ योगी।।
भरी हवा नै बाहर काड्ढैँ, धीरे-धीरे जिब सैँ योगी।
प्राणवायु मैँ न्यूँ होम्मैँ सैँ, अपान वायु नै 'रेचक' करदे।।
स्वासोच्छ्वास गती जिद दोन्नूँ, रोक ह्रिदै मैँ रखदे योगी।
पाणी तैँ ज्यूँ घड़ा भर्‌या हो, हिरदै मैँ जिद रोक्कै योगी।।
स्वासोच्छ्वास न हौवैँ दोन्नूँ, ह्रिदै घड़ै मैँ वायू रुकदा।
'अन्तःकुम्भक' इस नै कहँदे, रुकी हवा 'रेचक' तैँ काड्ढैँ।।
स्वासोच्छ्वास किमे नाँ करदे, ह्रिदै कुम्भ नै राक्खै खाल्ली।
'बाहर कुम्भक' न्यूँ अर योगी, 'प्राणायाम यग्य' सैँ करदे।।
'प्राण' गती नै रोक्कै जिब सैँ, 'अपान' अग्नि मैँ 'प्राण' द्रव्य का।
होम करैँ जिब 'पूरक' होवै, उस नै काड्ढैँ 'रेचक' होवै।।
हिरदै मैँ दोन्नू नै रोक्कैँ, 'अन्तःकुम्भक' योगी करदे।
स्वास काढ कैँ भीत्तर नाँ लैँ, दोन्नूँ नै न्यूँ रोक करैँ सैँ।
प्राणायाम यग्य वैँ योगी।। २९

अपरे नियताहाराः, प्राणान् प्राणेषु जुह्वति।
सर्वेऽप्येते यज्ञविदो, यज्ञक्षपितकल्मषाः।। ३०

(यग की महिमा)

थोड़ा, हितकर, सुद्ध, पवित्तर, भोग भोगदे सास्त्रनेम तैँ।
प्राणाँ तैँ सैँ जो चाल्लैँ सारी, प्राणायाम्माँ तैँ न्यूँ जीत्ती।।

ग्यान करम की इन्द्री आण्णी, प्राणाँ मैँ ए लीन करैँ सैँ।
सारे ए ये यग्ग्य जाणदे, यग्ग्याँ तैँ कर पाप समापत।। ३०

यज्ञाशिष्टामृतभुजो, यान्ति ब्रह्म सनातनम्।
नायं लोकोऽस्त्ययज्ञस्य, कुतोऽन्यः कुरुसत्तम।। ३१

यग्ग्य समझ कैँ कर्‌यै करम का, बचदा जो, वो इमरत होवै।
उस का भोग करणिये माणस, पावैँ ब्रह्म सनातन नै सैँ।।
नाँ या दुनिया होवै उस की, करदा नाँ जो यग्ग्य एक बी।
कित तैँ परला लोक सधेगा? कुरुआँ मैँ हे सब तैँ आच्छे।।३१

एवं बहुविधा यज्ञा, वितता ब्रह्मणो मुखे।
कर्मजान् विद्धि तान् सर्वानेवं ज्ञात्वा विमोक्ष्यसे।। ३२

न्यूँ भोत तह्राँ के यग विस्तृत, होए 'ब्रह्म' वेद कै मुँह मैँ।
तन मन वाणी के कर्माँ तैँ, जाण होणिये तैँ ये सारे।
इसा जाण तैँ छूट्टैगा रै, जग कै बन्धन, सुख दुक्खाँ तैँ ए।। ३२

श्रेयान् द्रव्यामयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः परंतप।
सर्वं कर्माखिलं पार्थ, ज्ञाने परिसमाप्यते।। ३३

(ग्यानयग्ग्य सै आच्छा)

बेहतर सै कल्ल्याण करणियाँ, स्थूल द्रव्य तैँ कर्‌ये यग्ग्य तैँ।
सूक्षम मन बुद्धी तैँ जिस नै, करदे ग्यानयग्ग्य वो अर्जन।।
सब तह्रियाँ के कारज आप्णे, अङ्गोपाङ्गाँ सँग पिरथासुत।
ग्यानयग्ग्य मैँ पूरण होँ सैँ।। ३३

(ग्यान पाण के तीन तरीक्के)

तद्विद्धि प्रणिपातेन, परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं, ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः।। ३४

वो जाण गुरू तैँ झुक कैँ तैँ, परसन कर कैँ सेवा कर कैँ।
निकट ग्यान कै ले ज्याँ गे वैँ, जाणै जो सैँ तन्त ग्यान का।
ग्रन्था तैँ, गुरु तैँ, अनुभव तैँ, जाणैँ, समझैँ, देक्खैँ उस नैँ।। ३४

यज्ज्ञात्वा न पुनर्मोहमेवं यास्यसि पाण्डव।
येन भूतान्यशेषेण, द्रक्ष्यस्यात्मन्यथो मयि।। ३५

(ग्यान की महिमा)

जो जाण कैँ नाँ फेर तैँ तैँ, मोह मैँ न्यूँ पड़ै गा पाण्डव।
जिस तैँ जग मैँ होणाळ्याँ नैँ, पूरी तह्रियाँ देक्खै गा तैँ।
आप्णै भीत्तर अर मेरे मैँ।। ३५

अपि चेदसि पापेभ्यः, सर्वेभ्यः पापकृत्तमः।
सर्वं ज्ञानप्लवेनैव, वृजिनं संतरिष्यसि।। ३६

अर जै सै तैँ पाप करणियैँ, सब तैँ ज्यादा पाप करणियाँ।
सारै पापसमुन्दर नै तैँ, ग्यान पोत तैँ पार करै गा।। ३६

यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात् कुरुतेऽर्जुन।
ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि, भस्मासात् कुरुते तथा।। ३७

ज्यूँ इन्धणाँ नै आग धँधकी, राख करै सै छण मैँ अर्जन।
ग्यान की या आग सै सारे, पापपुण्यमय कर्माँ नैँ ए।
भसम करै न्यूँ अर्जन, छिण मैँ।। ३७

न हि ज्ञानेन सदृशं, पवित्रमिह विद्यते।
तत् स्वयं योसंसिद्धः, कालेनात्मनि विन्दति।। ३८

नाँ ग्यान जिसा निर्मल करणाँ, इस दुनियाँ मैँ हो सै किम्मे।
उस नै खुद निस्काम करम कर, भली तह्राँ तैँ लायक हो कैँ।
समै बीतदे आप्णै मैँ वो, पा लेवै सै माणस अर्जन।। ३८

श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं, तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति।। ३९

(स्रद्धालू नै ग्यान मिलै सै)

कही राह पै सर्धा आळा, पावै माणस ततवग्यान सै।
लाग्ग्या रहै हमेसा उस पै, इन्द्री सारी बस मैँ राक्खै।
ततव समझ कैँ परम सान्ति वो, समै गँवाए बिन पावै सै।। ३९

अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च, संशयात्मा विनश्यति।
नायं लोकोऽस्ति न परो, न सुखं संशयात्मनः।। ४०

(सङ्कालू की निन्दा)

नाँ जाणै, नाँ सर्धा राक्खै, सँसै मैं जो पड़्या रहै सै।
सङ्का सब पै सदा करै जो, उस का नास सुनिस्चित हो सै।
नाँ या दुनियाँ सै, नाँ दूज्जी, नाँ सुख मिलदा सङ्काळू नै।। ४०

योगसंन्यस्तकर्माणं, ज्ञानसंछिन्नसंशयम्।
आत्मवन्तं न कर्माणि, निबध्नन्ति धनंजय।। ४१

(उपसंहार)

ईस्सर नै कर अर्पित सारे, करैं करम तज फळ की इच्छा।
नाँ वैं बाँद्धैं माणस नै सैं, यो ए उन का त्याग कुहावै।।
इसै करणियाँ नै अर जिन के, ततवग्यान तैं कट गे संसै।
इन्द्री मन पै कर कैं काब्बू, आप्णा माल्लक आप बणै जो।
इसे जण्याँ नै कर्म न बाँधैं, लड़ कैं धन जीत्तणिये अर्जन।। ४१

तस्मादज्ञानसंभूतं, हृत्स्थं ज्ञानासिनात्मनः।
छित्त्वैनं संशयं, योगमातिष्ठोतिष्ठ भारत।। ४२

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ज्ञानकर्मसंन्यासयोगो नाम चतुर्थोध्यायः।।४।।

इस कारण नाँसमझी तैं हो, हिरदै बैट्ठ्या पैर जमा कैं।
आप्णै ग्यान खडग तैं छिनभिन, कर कैं यो संसै करम-योग पै।
टिक-ज्या, उठ ज्या मोहनींद तैं, भरत बँस मैं जाए अर्जन।। ४२

स्रीमती सीत्तादेब्बी अर स्रीस्रीनिवास सास्तरी कै बेट्टै सिवनारायण सास्तरी कै हरियाणी भास्सा कै गीत्तायन काब्ब्यभास्य मैं चोत्था अध्याय पूरा होया।। ४।।

पूर्वसलोकयोग १६२ + ४२ = २०४